सामूहिक प्रार्थना

———:o:———

काश्मीरी पण्डित सहायक सभा

जम्मू

प्रथम संस्करण सन् २००७ मूल्य=)

निवेदन

इस सामूहिक प्रार्थना को काश्मीरी पंडित सहायक सभा की सांस्कृतिक उपसमिति (Cultural Committee) ने इस लक्ष्य से संगृहीत किया है कि आजकल के घोर अंधकारमय समय में हमारी जाति तथा देश का सर्वथा कल्याण हो। यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि जो भाई बहन श्रद्धापूर्वक प्रतिदिन इसका पाठ प्रातः करेंगे और प्रति रविवार को श्री शारिका मन्दिर की धर्मशाला में एकत्र होकर पूर्ण भक्ति से इसकी श्रद्धाञ्जलि श्री जगदम्बा के चरण कमलों में समर्पण करेंगे। उनकी पीड़ा, भय, दुःख, दारिद्रय और अन्य सभी प्रकार की आपत्तियां दूर हो जायेंगी और उनका मान और उत्कर्ष प्रतिदिन बढ़ता रहेगा और उनका सामाजिक तथा आर्थिक भविष्य समुज्ज्वल होगा।

जय शारिके !

जियालाल कौल जलाली
—सभा पति
सांस्कृतिक उपसमिति
—प्रधान
काश्मीरी पण्डित सहायक सभा।

श्री शारिका मन्दिर,
रिहाड़ी, जम्मू।
रविवार २६ नवम्बर, १९५०

श्री शारिकायै नमः

लाक्षा सिन्धूर वर्णं सुरवर नमितं मोदकै मोदितास्यं
हस्ते दन्तं दधानं हिमकर सदृशं तेजसोग्रं त्रिनेत्रम् ।
दक्षे रत्नाक्षसूत्रं वर परशुधरंमाखु सिंहासनस्थं
गाङ्गेयंरौद्रमूर्ति त्रिपुर वधकरं विघ्नभक्षं नमामि ॥१॥

लाख तथा सिन्धूर वर्ण वाले सब देवताओं से वन्दित मोदकों से प्रसन्न मुख, शुण्डा दण्ड से दन्त को ग्रहण किए हुए, चन्द्रमा के समान कान्ति वाले, तेज से उग्र, तीन नेत्रों से सुशोभित, दाएं हाथ में रत्न सूत्र वर तथा परशु धारण किए हुए, चूहे को वाहन बनाए हुए, गाङ्गेय रौद्रमूर्ति त्रिपुरासुर को मारने वाले, विघ्नों का आहार (नाश) करने वाले श्री गणपति जी को मेरा नमस्कार हो ॥१॥

ब्रह्मानन्दं परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्ति
द्वन्द्वातीतं गगन सदृशं तत्त्वमस्यादि लक्ष्यम् ।
एकं नित्यं बिमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतं
भावातीतं त्रगुण रहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥२॥

ब्रह्मानन्द स्वरूप, परमसुख के देने वाले, केवल, ज्ञान मूर्त्ति द्वन्द्वों से परे, आकाश के समान सर्वव्यापक, तत्त्वमसि आदि महा वाक्यों से निर्दिष्ट, एक नित्य, शुद्ध, अचल, सब की बुद्धियों का साची संकल्पों से परे, सत्वादि तीन गुणों से रहित सद्गुरु जी को मैं नमस्कार करता हूँ ॥२॥

अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरोद्दीपनकरी
जडानां चैतन्यस्तवकमकरन्द स्रुति सिरा ।
दरिद्राणां चिन्तामणि गुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवती ॥३॥

हे देवि ! अज्ञानियों के अन्तः करण में स्थित अन्धकार को हटा कर उजाला करने वाली सूर्य समान, जडों के लिए चैतन्य रूपी पुष्प रस बहाने वाली नाडी के समान, दरिद्रों के लिए चिन्तामणि रत्न की खान के समान, जन्मरूपी समुद्र में डूबे हुए प्राणियों का उद्धार करने के लिए मुर राक्षस को मारने वाले वराह अवतार के दान्तों के समान, तुम ही हो ॥३॥

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण—
स्त्वमेका नैवासि प्रकटित वराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं वरमपि च वाञ्छा समधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥४॥

हे देवि ! तुम्हारे अतिरिक्त देवता गण अभय वर हाथों से देने वाले हैं । परन्तु तुम केवल एसी ही नहीं हो किन्तु तुम ने वर और अभीति का जगत में नाट्य रचा है। इस लिए हे लोगों की शरण्ये ! तुम्हारे चरण कमल ही भय से बच ने के लिए और इच्छा से अधिक वर देने में समर्थ हैं ॥४॥

विप्राः क्षोणिभुजो विशस्तदितरे क्षीराज्यमध्वासवै-
स्त्वां देवि त्रिपुरे ! परापरमयी सन्तर्प्य पूजाविधौ ।
यां यां प्रार्थयते मनः स्थिरधियां तेषां त एव ध्रुवं
तां तां सिद्धिमवाप्नुवन्ति तरसा विघ्नैरविघ्नीकृताः ॥५॥

हे त्रिपुरे ! परापर स्वरूपिनी ! ब्रह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्रादि लोग क्रमशः दूध घी मधु और आसव से तुझे तर्पण कर प्रसन्न करते हैं और जिस जिस अभिलाषा की स्थिर चित्त हो कर प्रार्थना करते हैं उस अभिलाषा की सिद्धि तुम्हारी कृपा से निर्विघ्न प्राप्त करते हैं ॥५॥

उत्तप्त हेम रुचिरे ! त्रिपुरे ! पुनीहि
चेतश्चिरन्तनमघौघवनं लुनीहि ।
कारागृहे निगड बन्धन पीडितस्य
त्वत्संस्मृतौ झटिति मे निगडा स्त्रुटयन्ते ॥६॥

हे तप्तसुवर्ण वर्ण के समान भगवति त्रिपुरे। मेरे चित के चिर काल से संचित पापों के वन को काट कर मुझे पवित्र करो। बन्दी गृह में बन्धनों से जकडे हुए मुझ जैसे प्राणी की बेडियां तुम्हारे नाम स्मरण से तुरन्त ही टूट जायेंगीं ॥६॥

शर्वाणि ! सर्वजनवन्दितपादपद्मे !
पद्मच्छदच्छवि विडम्बित नेत्रलक्ष्मि !
निष्पाप मूर्तिजन मानस राजहंसि !
हंसि त्वमापदमनेक विधां जनस्य ॥७॥

सब लोगों से वन्दित चरण कमलों वाली शर्वाणि ! तुम्हारे नेत्रों की शोभा कमलिनी की शोभाको लजित करती है। निष्पाप स्वरूप मनुष्योंके मनरूपी मानसोवर की राजहंसि ! तुम प्राणियों की अनेक प्रकार की आपत्तियों का नाश करती हो ।।७।।

ददातीष्टान्भोगान्क्षपयति रिपून्हन्ति विपदो
दहत्याधीन्व्याधीञ्छमयति सुखानि प्रतनुते ।
हठादन्तर्दुःखं दलयति पिनष्टीष्ट विरहं
सकृद्ध्याता देवी किमिव निरवद्यं न कुरुते ।।८।।

हे देवि ! तुम इष्ट भोगों को देती हो शत्रुओं का संहार करती हो, आपत्तियों का नाश करती हो । मानसिक पीड़ाओं को जला डालती हो, और रोगों का शमन ताथ सुखों की वृद्धि करती हो । आन्तरिक दुखों को हठ से दलन करती हो और इष्ट वियोग को पीस डालती हो। हे देवी! इस लिए एक ही बार स्मरण करने से (अपने भक्तों को) क्यों न कलुष रहित करोगी ।।८।।

किं किं दुःखं दनुजदलिनि ! क्षीयते न स्मृतायाँ
का का कीर्तिः कुलकमलिनि ! ख्याप्यते न स्तुतायाम्
का का सिद्धिः सुखरनुते ! प्राप्यते नार्चितायां
कं कं योगं त्वयि न चिनुते चित्तमालम्बितायाम् ।।९।।

हे राक्षसों का संहार करने वाली वह कौन से दुःख हैं जो तुम्हारे स्मरण से दूर नहीं होते। हे कुल कमलिनि! वह कौन से यश हैं जो तुम्हारी स्तुति करने से विख्यात् न हों। हे देवताओं से वन्दित भगवति! वे कौन सी सिद्धियां हैं जो तुम्हारी पूजा करने से प्राप्त न हों। एवं वे कौन से योग हैं जिन का तुम्हारा ध्यान चित्त में लाने से संचय न हो ॥९॥

ये देवि! दुर्धरकृतान्त मुखान्तरस्था
ये कालि! काल घन पाश नितान्त बद्धाः।
ये चण्ड! चण्डगुरु कल्मष सिन्धु मग्ना
स्तान्पासि मोचयसि तारयसि स्मृतैव ॥१०॥

हे देवि! जो कठोर यमराज के मुख में पड़े हैं, हे कालि! जो काल के दृढ पाश में दृढबद्ध हैं, हे चण्डि! जो उग्र और भारी पाप समुद्र में डूबे हुए हैं उन सब को क्रमशः तुम बचाती हो छुडाति हो और पार करती हो ॥१०॥

हन्तुं त्वमेव भवसि त्वदधीनमीशे
संसार तापमखिलं दयया पशूनाम्।
वैकर्तनी किरण संहतिरेव शक्ता
घर्मं निजं शमयितुं निजयैव वृष्ट्या ॥११॥

हे चराचर की [redacted] स्वामिनि भगवति ! तुम्हारी अधीनता में होते हुए पशुओ (अज्ञानियों) का समस्त संसारिक ताप तुम अपनी कृपा से नाश करनें में समर्थ हो जैसे सूर्य के किरणों का समूह अपनी गरमी को अपनी ही वृष्टि से शांत करने में समर्थ है ॥११॥

शुचि पयसि कृशानौ मारुते खे शशाङ्के
सवितरि यजमानेऽप्यष्टधा शक्तिरेका ।
वहति कुचभराभ्याँ या विनम्रापि विश्वं
सकलजननि सा त्वं पाहिमामित्यवश्यम् ॥१२॥

जो शक्ति पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश चन्द्रमा सूर्य और यजमान में आठ प्रकार से भिन्न भिन्न रूप में व्यवस्थित है, जो अपने कुच भार से नम्र हो कर सारे विश्व को धारण किए हुए है एसी ही तू हे जगन्माता ! मेरी अवश्य रक्षा कर ॥१२॥

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तो
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि
दारिद्रय दुःख भय हारिणि ! का त्वदन्या
सर्वोपकार करणाय दयार्द्रचित्ता ॥१३॥

हे दुर्गे तुम्हारा स्मरण करते ही तुम सब प्राणियों के भय को दूर कर देती हो, स्वस्थ जन भी यदि तुम्हारा स्मरण करता है तो उसे भी अति शुभ बुद्धि प्रदान करती हो, तुम्हारे अतिरिक्त दारिद्र्य, दुःख, भय दूर करने के लिए दूसरा कौन है, तुम्हारा मन सदैव दया भाव से सब पर उपकार करने में द्रवित होता रहता है ॥१३॥

स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्ट संश्रया
तथा सुरेन्द्रेण दिनेश सेविता।
करोतु सानः शुभहेतुमीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तुमापदः ॥१४॥

अभीष्ट सिद्धि की आश्रय दुर्गे! पहले देवताओं ने फिर इन्द्र ने और फिर सूर्य ने स्तुति करके तुम्हारी सेवा की थी, ऐसी तुम हमारे शुभ का कारण बनती हुई हमारी आपत्तियों को दूर कर हमारी कल्याण कारिणी बनो ॥१४॥

यासां प्रतंन्नोदित दैत्य तापितै-
रस्माभिरीशादि सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः
सर्वापदो भक्ति विनम्र मूर्तिभिः ॥१५॥

हे दुर्गे! बड़े बड़े उग्र दैत्यों से सताए हुए हम लोग और महादेव आदि देवता भक्ति भाव से सिर झुका कर तुम्हारी वन्दना करते हैं। तुम्हारा स्मरण करते ही तुम हमारी आपत्तियों को दूर कर देती हो ॥१५॥

त्वं मे महेशि जननी परमार्तिहर्त्री
त्वं मे पिता हिततमस्त्वमहेतुबंधुः ।
त्वं मे भवाब्धितरणे दृढनौस्त्वमेव
दुःखामयाधिहरणे चतुरश्च वैद्यः ॥१६॥

हे ज्वाला भगवती ! तुम मेरी परम संकट हरने वाली माता हो, तुम मेरा बहुत हित करने वाले पिता हो, तुम मेरी निष्कारण बन्धु हो, तुम संसार सागर के पार उतरने में दृढ़ नौका हो, और तुम ही मेरे दुःख, रोग, मानसिक पीडा आदि का नाश करने के लिए चतुर वैद्य हो ॥१६॥

मोहाटवी विकट संकट पीडितोऽहं
राज्ञी प्रपन्नपरमार्तिहरा त्वमेका ।
जाज्वल्यतेऽम्ब हृदयार्तिकरो ममान्तः
पापाग्निरेशि शमयैनममा स्वरूपे ॥१७॥

मैं मोह रूपी जंगल के भयंकर संकटों से पीड़ित हूँ हे राज्ञि ! शरणागत के दुःख हरने वाली तू ही एक हो । हे माता मेरे हृदय को पीड़ा पहुंचाने वाली पापाग्नि मेरे अन्तःकरण में जल रही है क्षमा (जल) स्वरूपिनी भगवती ! इसे तुरन्त बुझा दो ॥१७॥

अष्टादशैरसिगदादि युतैर्भुजैर्या
त्रातुं समस्त भुवनानि विपद्भयेभ्यः।
जागर्त्यशेष जन दुःख हरा परा सा
श्री शारिका दिशतु मङ्गल सन्ततिं नः ॥१८॥

खड्ग गदा आदि शस्त्रों से युक्त, अठारह भुजाओं से सारे संसार को भय और विपत्तियों से बचाने के लिये जो सदैव जाग्रत रहती है, वह संपूर्ण प्राणियों का दुःख दूर करने वाली श्री परा स्वरूपिनी शारिका भगवती हम सब पर कल्याण की धारा बहाए ॥१८॥

बीजैः सप्तभिरुज्ज्वलाकृतिरसौ या सप्त सप्तिर्द्युतिः
सप्तर्षि प्रणिताङ्घ्रि पङ्कजयुगा या सप्तलोकार्तिहृत्।
काश्मीर प्रवरेषु मध्यनगरे प्रद्युम्न पीठे स्थिता
देवी सप्तक संहिता भगवती श्रीशारिका पातु नः ॥१९॥

जिसका तेज सूर्य के समान है, जिसकी आकृति सात बीजों से उज्जवल है, जिसके चरण युगल सप्तऋषियों द्वारा वन्दित हैं, जो सात लोकों की पीड़ा को दूर करने वाली है, वही काश्मीर देश के मध्यनगर (श्रीनगर) में प्रद्युम्न पीठ पर विराजमान सप्तकों से युक्त श्री शारिका भगवती हमारी रक्षा करे ॥१९॥

अये ! मातर्लक्ष्मि त्वदरुण पदाम्भोज निकटे
लुठन्तं बालं मामविरलगलद्बाष्प जटिलम् ।
सुधासेक स्निग्धैरतिमसृण मुग्धैः करतलैः
स्पृशन्तो मारोदीरिति वद समाश्वास्यसि कदा ॥२०॥

हे माता लक्ष्मी ! तुम्हारे लाल चरणों के निकट लोटते हुए तथा नेत्रों से निरन्तर जलधारा बहाते हुए मुझ बलक को तुम कब अपने अति कोमल और चिकने हाथों की हथेलियों से स्पर्श करती हुई आश्वासन दोगी कि रोओ मत ! कृपया यह तो कहदो ॥२०॥

दुरापादुर्वृत्तैर्दुरितदमने दारुणभरा
दयार्द्रा दीनानामुपरि दलदिंदीवरनिभा ।
दहन्ती दारिद्र्यद्रुमकुलमुदार द्रविणदा
त्वदीया दृष्टिर्मे जननि दुरदृष्टं दलयतु ॥२१॥

कुमति वालों को कष्ट से प्राप्य पापों के दमन करने में परमशक्ति वाली, दीन दुःखियों पर दया से द्रवित हो कर खिले हुए इन्दीवर के सदृश्य शान्ति देने वाली, दारिद्र्यरूपी वृक्ष के समूह को जलाने वाली, निष्कपट भाव से अनन्तसम्पत्ति देने वाली, हे माता ! तुम्हारी दृष्टि मेरे दुर्भाग्य का दलन करे ॥२१॥

ॐ३ मदा ३ मों ३ पिबा ३ मों३ देवो वरुणः प्रजापतिः सविता २ ऽन्नमिहा २ ऽऽहरदन्नपते३ ऽन्नमिहा २ ऽऽहरा २ ऽऽहरो ३ मिति ।।२२।

हम खाये, हम पियें, वरुण, प्रजापति तथा सूर्य देवता हमारे लिए अन्न लायें। हे अन्नपति देवता ! हमारे लिये अन्न लाइए ।।२२।।

शुभमस्तु सर्व जगतां परहित निरता भवन्तु भूतगणाः
दोषाः प्रयान्तु शान्ति सर्वत्र सुखिनो भवन्तु लोकाः ।।२३।।

समस्त जगत का कल्याण हो सब प्राणी परोपकारी हों। सारे दोष शान्त हो जाएं। और सर्वत्र लोग सुखी रहें ।।२३।।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी सस्यशालिनी ।
लोकोऽयं क्षोभ रहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः ।।२४।।

समय पर मेघ वर्षा करें, पृथ्वी धान्य पूर्ण हो, लोग दुःख रहित हों और ब्राह्मण निर्भय हों ।।२४।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाजनः ।।२५।।

सब लोग सुखी रहें, सब आधि व्याधियों से रहित हों, सब मङ्गल कार्य देखें और कोई भी दुःख का भागी न हो ।।२५।।

भद्रंकर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः ।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाँसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः ॥२६॥

हे देवगण ! हम कानों से कल्याणमय वचन सुनें। हम भगवान का भजन करते हुए नेत्रों से भी सदा कल्याण का ही दर्शन करें। हम सुदृढ़ अङ्गों एवं शरीर से भगवान की स्तुति करते हुए अपनी आयु आराध्य देव परमात्मा के कार्य में लगा कर व्यतीत करें ॥२६॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिः नः पूषा विश्ववेदाः
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु॥२७॥
ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

जिनका सुयश सब ओर फैला हुआ है वे देवराज इन्द्र, सर्वज्ञ पूषा, अरिष्ट निवारक गरुड़ और बुद्धि के स्वामी बृहस्पति सदा हमारे कल्याण का पोषण करें ॥२७॥

ताप त्रय की शान्ति हो !!!

समाप्तम्

सूचना

श्री शारिका मन्दिर

आपको विदित होगा कि जम्मू में रहने वाले भाइयों ने पिछली जुलाई में निश्चित किया, कि बीस वर्ष पहले के निर्णय के अनुसार श्री शारिका मन्दिर की स्थापना करना अत्यन्त आवश्यक है। तदनुसार ६ अगस्त १६५० को मन्दिर के बनाने का काम आरम्भ किया गया परन्तु सितम्बर की भारी वर्षा और कुछ अन्य कारणों से काम स्थगित करना पड़ा। अब परिस्थिति सुधर जाने से मन्दिर का कार्य फिर से चालू किया जा रहा है।

श्रद्धालु भाई बहनों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस सांस्कृतिक तथा सामाजिक स्मारक का पूर्ण निर्माण उनकी उदारता पर निर्भर है। अतः जिन महानुभावों ने अब तक इस धार्मिक पुण्य कृत्य में भाग न लिया हो वह शीघ्र ही हाथ बटा कर सभा को सहयोग दें, और अपना दान (चन्दा) प्रार्थक के नाम भेज कर कृतार्थ करें।

प्रार्थक
जियालाल कौल जलाली
प्रधान
काश्मीरी पंडित सहायक सभा

रिहाड़ी, जम्मू।

अपनी सभा को मत भूलिएगा
प्रति रविवार को प्रातः ६ बजे
शारिका मन्दिर में आकर
सामूहिक प्रार्थना में
भाग लें।

॥ सर्वाधिकार सुरक्षित हैं ॥

जनता प्रेस जम्मू में छपा